पेड़ पौधे और हम

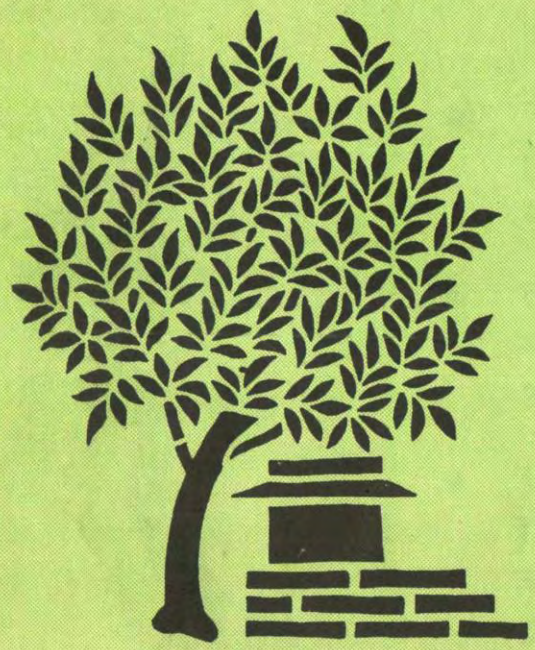

संस्करण :
द्वितीय

वर्ष :
2006

प्रकाशक :
ग्राविस
ग्रामीण विकास विज्ञान समिति
3/458, मिल्कमैन कॉलोनी
पाल रोड, जिला-जोधपुर-342 008 (राज.) भारत
फोन : 0291-2785317, फैक्स : 0291-2785549
ई-मेल : gravis@datainfosys.net
वेब साइट : www.gravis.org.in

मुद्रक :
श्याम प्रिण्टिंग प्रेस
219, स्टेडियम शॉपिंग सेन्टर
जोधपुर-342 001 (राज.)
दूरभाष : 0291-2553549, 2633133

खेजड़ी

- इसे मरु भूमि की तुलसी मानते हैं। शुभ अवसरों पर खेजड़ी की पूजा करते हैं।
- पत्तियां (लूंग) बकरी, भेड़, गाय तथा हिरन के लिए बढ़िया चारा है।
- फलिया (सांगरी) बहुत पौष्टिक (प्रोटीनयुक्त) सब्जी है। उबाल कर सुखाने पर वर्ष भर सुरक्षित रखी जा सकती है।
- लकड़ी जलावन (बलिता), घर बनाने, सब्जी पकाने का डोयिला बनाने के काम आती है। इसके पेड़ से गोंद मिलता है।
- खेजड़ी की जड़ों में नेत्रजन वाले कीटाणु होते हैं जो वायुमण्डल से नेत्रजन इकट्ठा करते हैं और भूमि को उपजाऊ बनाते हैं। इससे खेत में फसल अच्छी होती है।

नीम

- यह एक छायादार वृक्ष है।
- लकड़ी जलावन पलंग (पाटा), दरवाजे, फर्नीचर तथा भवन निर्माण के काम आती है।
- बीज से अखाद्य तेल तथा जैविक खाद के रूप में खली प्राप्त होती है।
- नीम की कोमल शाखायें दाँत साफ करने के काम आती है।
- नीम की पत्तियां व छाल कई प्रकार के रोगों के उपचार हेतु प्रयोग की जाती है।
- नीम की पकी निम्बोली (गूदा) खाने से गर्मी में लू का असर कम होता है।

रोहिड़ा

- रोहिड़ा की लकड़ी बहुत कीमती होती है। इसे रेगिस्तान का सागौन कहा जाता है। यह विशेष रूप से दरवाजे, खिड़की, फर्नीचर आदि बनाने के काम आती है।
- हरा रोहिड़ा जड़ से काटना पाप मानते हैं। यह कमजोर भूमि में भी उग जाता है।
- फूल तथा फल पशुओं के खाने के काम आते हैं।
- फूलों से मधुमक्खी शहद बनाती है।

कुमटियां

- कुमटियां का बीज साँगरी की सब्जी के साथ में मिलाकर खाया जाता है। बीज में 65 प्रतिशत प्रोटीन होता है। इतना प्रोटीन किसी भी वनस्पति में नहीं होता।
- लकड़ी जलावन तथा कृषि औजार के काम आती है।
- कुमटियां की जड़ से झेरना बनता है। इससे गोंद भी मिलता है।
- फलियां व पत्तियां पशुओं के चारा हेतु प्रयोग की जाती है।

सेवण

- यह एक प्रोटीनयुक्त घास है जो पशुओं के चारे के काम आती है।
- सेवण की जड़ें एक बार लग जाने पर हमेशा चारा देती रहती है।
- एक बार वर्षा हो जाने पर भी सेवण का चारा प्राप्त किया जा सकता है।
- हल्की सिंचाई की सुविधा होने पर सेवण की आठ कटिंग्स ली जा सकती है।
- सेवण के चारे का कई वर्ष तक भंडारण किया जा सकता है।
- मिट्टी को बाँधने का कार्य करती है। भू-क्षरण को रोकती है।
- गाय को खिलाने से दूध अधिक होता है।

तुम्बा

- यह एक लता है जो जमीन पर फैलती है।
- भू-क्षरण को रोकने में बहुत प्रभावकारी काम करती है।
- तुम्बा का फल कड़वा (खारा) होता है तथा बकरियों के खाने के काम आता है।
- बीज से तेल निकाला जाता है जो साबुन बनाने के काम आता है।
- बीज को धोकर उसके दलिये को बाजरी के आटे में मिलाकर रोटी बनाते हैं।
- तुम्बा का मुरब्बा बनना भी शुरू हुआ है।

मूबावली

- वायु द्वारा भू-क्षरण को रोकती है।
- पत्तियां चारा तथा फलियां सब्जी के रूप में प्रयोग की जाती है।
- लकड़ी छोटी-बड़ी टोकरी, अनाज की कोठी बनाने तथा जलावन के काम आती है।
- इससे गोंद मिलता है।

सिणियां

- एक छोटी झाड़ी है तथा भू-क्षरण को रोकती है।
- छप्पर (झोंपा) तथा रस्सी बनाने के काम आती है।
- ऊँट, बकरी, भेड़ तथा हिरन के चारे के रूप में प्रयोग की जाती है।

बुई

- यह छोटी झाड़ी है और वायु द्वारा भू-क्षरण को रोकती है।
- बुई के फूल तकिये तथा गद्दे बनाने के काम आते हैं जिन्हें प्रयोग करने से गर्दन तथा शरीर के अन्य जोड़ों का दर्द ठीक हो जाता है।
- गाय, बकरी, भेड़ का चारा है।

फोग

- वायु द्वारा भू-क्षरण को रोकता है।
- झाड़ी के रूप में उगता है। फोग को बकरी, गाय, भेड़ तथा ऊँट खाते हैं।
- लकड़ी जलावन व झोपा बनाने के काम आती है। कोयला भी बनता है।
- फोग की लकड़ी से ऊँट की नाक में डालने के लिये नक्सूनिया बनाते हैं।

खींप

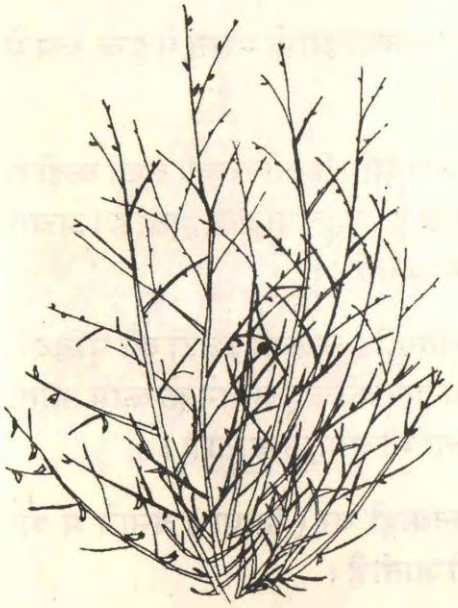

- यह सीणियां जैसी लेकिन आकार में बड़ी झाड़ी है तथा भू-क्षरण को रोकती है।
- खींप भी छप्पर (झोंपा) तथा रस्सी बनाने के काम आती है।
- पैर में काँटा लग जाने पर खींप का रस लगाने से काँटा बाहर आ जाता है।
- दाद के ऊपर खींप का रस लगाने से दाद ठीक हो जाता है।
- रोटी रखने के लिये खींप से टोकरी बनाई जाती है।

कैर

- कैर वायु द्वारा भू-क्षरण को रोकता है, मिट्टी को उपजाऊ बनाता है। जहां कैर हो, वहां फसल अच्छी होती है। कैर की खाद भी बनती है।
- कैर सामान्यतया झाड़ी परन्तु पेड़ के रूप में भी होता है।
- कैर का फल सांगरी की सब्जी तथा कढ़ी में डाला जाता है। बहुत पाचक होता है। अचार भी बनाया जाता है।
- कैर की लकड़ी (चक्की) घटी की मूंडिया, माकड़ी व हल की चहू बनाने के काम आती है। कोयला भी बनाया जाता है।
- कैर की लकड़ी घर (झोपा) बनाने में भी प्रयोग की जाती है।
- कैर से कई देशी दवाईयां बनती है।

बोरड़ी

- पत्तियां (पालो) बकरी, ऊँट, गाय, भेड़, गधा, भैंस के लिए बहुत स्वादिष्ट तथा पौष्टिक चारा है।
- फल मनुष्य तथा पशुओं के खाने के काम में आता है।
- बोरड़ी की झाड़ी प्रतिवर्ष धरातल से काट ली जाती है। कटी हुई झाड़ी सुखाकर चारा (पत्तियां) तथा काँटा अलग कर लेते हैं। कांटा बाड़ तथा कई (चारा रखने के लिए एक विशेष प्रकार का घर) बनाने के काम आता है।
- बोरड़ी की छाल चमड़ा रंगने तथा लकड़ी, टोकरी तथा छैगनी/चौकनी आदि कृषि औजार तथा दही बिलौने के लिए झेरना बनाने के काम आती है।
- बोरड़ी भू-क्षरण को रोकती है।

आकड़ा

- भू-क्षरण को रोकता है।
- आकड़ा के फूलों से प्राप्त रूई तकिया बनाने के काम आती है।
- फूल तथा पत्तियां बकरियों के खाने के काम आती हैं।
- लकड़ी झोपा बनाने, ज्वाड़ा (कृषि औजार) बनाने तथा जलावन के काम आती है।
- आक की छाल में रेशा होता है। रेशे से खाट बनाने हेतु रस्सी तथा दरी बनाने हेतु धागा बनाया जाता है।
- दूध कई बीमारियों में दवाई के रूप में प्रयोग किया जाता है।
- आक की पत्तियाँ खाना खाने, चाय तथा पानी पीने के काम में आ जाती है। सफेद फूल वाले आक को शिव का आक कहते हैं और मन्दिर बनाकर पूजा करते हैं।